ALLIANCE UNIVERSITY

ISSN No. 2583-2948

April – June 2023
Vol. No 03 I Issue. No 02

अनुकर्ष ಅನುಕರ್ಷ
Anukarsh

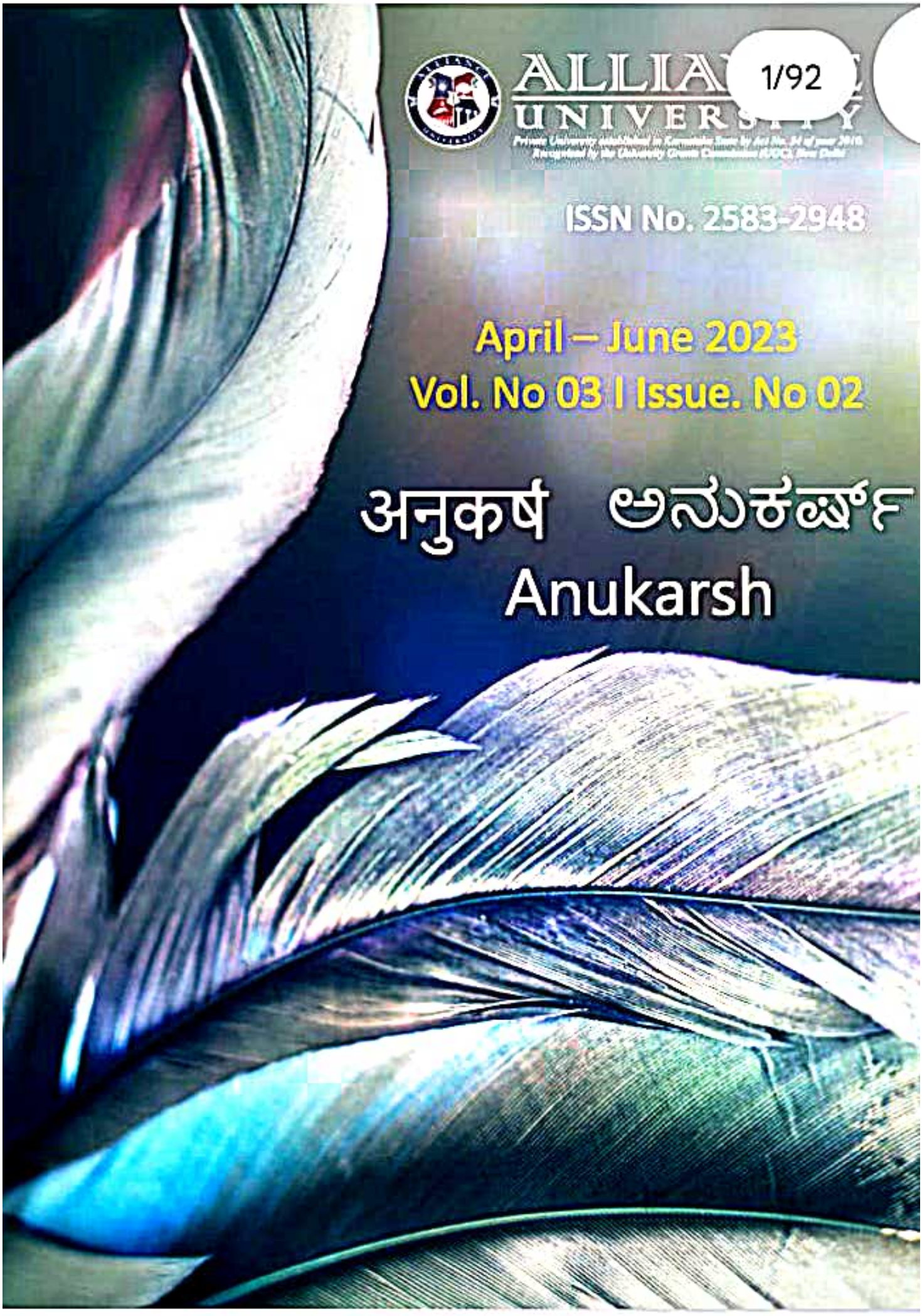

Anukarsh – A Peer – Reviewed Quarterly Magazine

ISSN – 2583-2948

ದೂರವಾಣಿ/दूरभाष /Phone : 0821-2345112/13
ಮುಖ್ಯಸ್ಥರು/अध्यक्ष/Head : 0821-2345018
ಫ್ಯಾಕ್ಸ್ / फैक्स / Fax: 0821-2515032

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಪರೀಕ್ಷಣ ಸೇವೆ-ಭಾರತ
ಶಿಕ್ಷಣ ಸಚಿವಾಲಯದ ಕೇಂದ್ರೀಯ ಯೋಜನೆ
ಪರೀಕ್ಷಣೆ ಮತ್ತು ಮೌಲ್ಯಮಾಪನ ಕೇಂದ್ರ
ಮುಖ್ಯ ಕಚೇರಿ : ಭಾರತೀಯ ಭಾಷಾ ಸಂಸ್ಥಾನ
ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣ ವಿಭಾಗ, ಭಾರತ ಸರ್ಕಾರ
ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು-570006

राष्ट्रीय परीक्षण सेवा-भारत
शिक्षा मंत्रालय की केंद्रीय योजना
परीक्षण एवं मूल्यांकन केंद्र
मुख्यालय: भारतीय भाषा संस्थान
उच्चतर शिक्षा विभाग, भारत
मानसगंगोत्री, मैसूरु-570006

NATIONAL TESTING SERVICE-INDIA
Central Scheme of Ministry of Education
Centre for Testing and Evaluation
HQ : Central Institute of Indian Languages
Dept. of Higher Education, Govt. of India
Manasagangotri, Mysuru-570006

ಜಾಲತಾಣ/वेब साइट/Website : www.ciil-ntsindia.net
ಈ-ಮೇಲ್/ई-मेल/Email : headnts@gmail.com

संदेश

देशकाल परिस्थिति और वातावरण के अनुसार शिक्षा प्रणाली और समाज में परिवर्तन होते रहते हैं। समूचे भारत को एकता के सूत्र में बांधने के उद्देश्य से भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं उनके क्रियान्वयन के साथ-साथ भारतीय भाषाओं को रोजगार परक बना करके डिजिटल इंडिया अभियान में में अपना अमूल्य सहयोग करने वाली प्रविधि हेतु इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि नई शिक्षा पद्धति से उद्भूत यह विचारधारा निश्चय ही एक समुन्नत भारत की मार्गदर्शक होगी जिसमें यह संगोष्ठी भी अपनी निर्णायक भूमिका निभाएगी। भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर ऐसे सार्थक प्रयासों का समर्थन तथा उनके सफल कार्यान्वयन में अपना योगदान करने हेतु सदैव तत्पर रहता है। मैं संस्थान की ओर से आयोजक समिति को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

सादर

(Pankaj Dwivedi)

ISSN – 2583-2948

ए के अर्चना

हिंदी असिस्टेंट प्रोफेसर,

डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी

सैंट मैरिज सेंटेनरी डिग्री कॉलेज,

सिकंदराबाद, हैदराबाद,

तेलंगाना।

मेल आईडी: archanashah434@gmail.com

समाज की अभिवृद्धि में भारतीय साहित्य का अवदान

साहित्य और समाज वैसे तो विपरीत से प्रतीत होते है, पर सही मायने में देखा जाए तो दोनो को एक ही सिक्के के दो पहलू कहना उचित होगा। मनुष्य जन्मोपरांत अपने परिवार के द्वारा अपने समाज से सर्वप्रथम जुड़ता है उसके बाद ही वो अपने हितचिंतकों द्वारा साहित्य की जानकारी प्राप्त करता है। जैसे साहित्य की उन्नति के लिए समाज की अभिवृद्धि अतिआवश्यक है, उसी तरह से समाज की अभिवृद्धि के लिए साहित्य का अवदान जरूरी है। समाज शब्द का प्रयोग व्यक्ति के समूह के लिए किया जाता है तो साहित्य शब्द का प्रयोग सभी के हित के भाव से सम्मिलित होता है।

साहित्य अगर जीवन की आलोचना है तो समाज उस जीवन का रक्षण करता है। समाज की अभिवृद्धि के लिए साहित्य का अवदान अतिआवश्यक है क्योंकि समाज भले ही मनुष्य को सुरक्षित रखता है, परंतु साहित्य मनुष्य का जीना सिखाता है। अंततः जीवन की सार्थकता को निर्वाहित करने के लिए समाज तथा साहित्य दोनो का साथ होना परम आवश्यक है।

ISSN – 2583-2948